A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

अंतरराष्ट्रीय कुल्लू दशहरे की परम्परा में महानाटी के गीतों का सांस्कृतिक महत्व

Shweta[1], Dr. Jeetram Sharma[2]

1 Ph.D. Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla
2 Head of Department, Department of Music, Himachal Pradesh University, Summer Hill, Shimla

Read the Article Online

Cite this Article

Published on 15 June, 2026

Shweta and Sharma, J.R. (2026). antarrashtriya kullu dashahre ki parampara mein mahanati ke geeton ka sanskritik mahatva. Swar Sindhu, 14(1), 261-267.

सारांश -

अंतरराष्ट्रीय कुल्लू दशहरा हिमाचल प्रदेश का एक अनोखा और प्राचीन धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सव है, जो विजयदशमी के अगले दिन से शुरू होकर सात दिनों तक चलता है. इस उत्सव में स्थानीय देवी-देवताओं का 'देव मिलन' होता है और ढोल-नगाड़े, तुरही, बाँसुरी, ढोलक जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों पर लोक संगीत की धुन गूंजती रहती है. इस परंपरा का सबसे महत्वपूर्ण भाग 'नाटी नृत्य' (महानाटी) है. जो वर्तमान में दशहरे की एक मुख्य पहल है, संस्कृति के संरक्षण में। कुल्लू के राज दरबार का कुल्लू के देवी देवताओं के साथ पारम्परिक सम्बंध रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र कुल्लू दशहरे की परम्परा में महानाटी के लोक कलाकारों द्वारा गाए गए नाटी के गीतों का भी सांस्कृतिक महत्व को प्रस्तुत करता है। महानाटी में पारंपरिक नृत्य-शैली के साथ-साथ वाद्ययंत्र व लोकगीत के साथ साथ अंतरराष्ट्रीय कुल्लू दशहरा उत्सव में लोक कलाकारों की सहभागिता से यह परंपरा नई पीढ़ी के लिए आकर्षक बन रही है। शोध का उद्देश्य यह पहचानना है कि कैसे महानाटी लोक संगीत की परंपरा को बनाए रखते हुए आधुनिकता के साथ समायोजित हो रही है, और क्या इस प्रक्रिया में परंपरा की प्रासंगिकता बनी रहती है या नहीं. परिणाम दर्शाते हैं कि कुल्लू दशहरा लोक संगीत और नाटी नृत्य के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है, जबकि आधुनिक तत्वों का समावेश इसे वैश्विक पर्यटकों के लिए भी उपयुक्त बना रहा है।

***मुख्य शब्द*:** *कुल्लू दशहरा, लोक संगीत, कुल्लवी नाटी, महानाटी, सांस्कृतिक आधुनिकीकरण, महिला सशक्तिकरण।*

भूमिका

दशहरा सम्पूर्ण भारत का लोकप्रिय व प्रमुख धार्मिक त्योहार है,जिसे सम्पूर्ण भारत वर्ष में विभिन्न तरीकों से धूमधाम से मनाया जाता है। पूरे हिमाचल में मेले एवं त्योहारों की श्रृंखला में कुल्लू दशहरे का अपना देविय महात्मय है, कुल्लू में त्योहार ही जब मेले के रुप में उत्सव के रुप में मनाए जाते हैं, तो दशहरे का नाम सबसे पहले आता है। कुल्लू का ऐतिहासिक ढालपुर मैदान सदियों से ही देव मिलन का स्थान रहा है,जहाँ हर वर्ष एक दिन सभी देवी देवताओं का मिलन होता था। कालान्तर में भगवान रघुनाथ की मूर्ति के कुल्लू लाए जाने पर दशहरा ही सभी के भव्य मिलन का केन्द्र बन गया, जहाँ कुल्लू के राजा घाटी के सभी देवी देवताओं को दशहरे का निमन्त्रण देता है और सभी खुशी खुशी इसमें अपनी हाज़री देते हैं और भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करते हैं। और ये परम्परा राजा जगत सिंह के समय से चलती आ रही है। कुल्लू का दशहरा अन्य भागों की तरह अश्विन शुक्ल दशमी के दिन समाप्त न होकर उस दिन से सप्ताह भर आयोजित होता है, ऐसा मैना जाता है कि त्रेता युग में रावण वध के उपरान्त राम ने सति सीता प्राप्त कर ली और विजयदशमी के पर्व का शुभारम्भ तो हो गया परन्तु पाताल लोक में अहीरावण का अत्याचार फिर भी जारी रहा तब वीर हनुमान तथा विभीषण ने दल बल सहित पाताल लोक पर आक्रमण कर दिया। और विजय भी प्राप्त कर ली। ये पुर्णमासी का दिन था,इसलिए दशहरा उस दिन तक चला। तो ऐसी कई कथाएं हैं, जो इस कुल्लू के दशहरे के पौराणिक महत्व का भलि भांति वर्णन करता है।

दशहरे की सभी रीतियों मुख्य विषय जो है वो है संगीत ,जो इन सब को एक सूत्र में पिरोए रखता है,और सदियों से इस ऐतिहासिक परम्परा का साक्षी है। कुल्लू के किसी भी उत्सव में, मेले में संगीत न हो ऐसा लगभग असंभव ही है तो लोक संगीत इस पूरे दशहरे की रीत में रथ यात्रा से लेकर, देव संगीत से लेकर नृत्य व रंगमंच तक परम्परागत रुप से अग्रणी स्थान बनाए हुए है।

हिमाचल प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में 'कुल्लू दशहरा' अपनी विशिष्ट धार्मिक, सामाजिक और संगीतात्मक पहचान रखता है। वर्ष 1661 से चली आ रही इस देव-मिलन की ऐतिहासिक परंपरा में लोक संगीत और सामूहिक लोक नृत्य 'नाटी' हमेशा से केंद्रीय स्तंभ रहे हैं। पारंपरिक रूप से नाटी केवल मनोरंजन या उत्सव का साधन न होकर, विभिन्न घाटियों के देवी-देवताओं के स्वागत और सामाजिक सामंजस्य का माध्यम रही है। महानाटी कुल्लू के दशहरे के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। 2014-15 में महिला सशक्तिकरण की थीम पर 7000 से अधिक महिलाओं ने मुख्य रुप से कुल्लू के परधानों में ढालपुर मैदान में ये नाटी प्रस्तुत की और आज तक ये एक मंगलमय परिवर्तन एख परम्परा बन गया है। यहाँ हम देख

सकते हैं कि दशहरे की ये ऐतिहासिक परम्परा आज भी सर्वसाधारण के बीच वही स्थान बनाए हुए है. और इसमें संगीत का विशेष योगदान है। संगीत हर मेले को आभूषण जैसे अलंकृत कर देता है और कोई भी विलुप्त होती परम्परा को पुनर्जागृत करने के लिए उत्तम माध्यम है। लेकिन तब से लेकर आजतक कुछ एक क्षेत्रों में परिवर्तन भी देखने को मिला है,आज उतना समय लोग दे नहीं पाते तो कम समय में ही सब अपनी भागीदारी ज़रुर सुनिश्चित करते हैं।

इतिहास एवं विशेषताएं

शाब्दिक रुप से दश+ हरा दस पापों के हरण से है। इसका दूसरा रुप दुशहरा भी है जिसकी व्युत्पति दुष्ट+हरा से मेल खाती है, क्योंकि हम जानते हैं कि प्राचीन कथाओं के अनुसार इसी दिन इन्द्र ने वृतासुर को मारा था,माता ने महिषासुर का वध किया था और भगवीन राम ने रावण का अन्त किया था।"1

कुल्लू में दशहरे का शुभारम्भ 17वीं शताब्दी में उस परिस्थिति में हुआ जब राजा जगतसिंह को टिप्परी के ब्राह्मण दुर्गादत द्वारा किए गए आत्मदाहन के अभिषाप के कारण खाने में कीड़े तथा पानी में खून दिखाई देने लगा। "कुछ लोग राजा को कुष्ट रोग होने का भी वर्णन करते हैं। इस के निवारण के लिए बाबा पयहारी जो फुआरी बाबा के नाम से जाने जाते थे उन्होने राजा को भगवान राम की चमत्कारी मूर्तियों के बारे में बताया। और दुर्गादत द्वारा वे प्रतिमा को लाकर पहले 1651 में मकड़ाह में फिर 1653 में मणिकर्ण मंदिर में रखा गया तथा बाद में 1660 में कुल्लू के रघुनाथ मंदिर में स्थापित किया गया। राजा प्रतिदिन चरणामृत ग्रहण करने से रोग मुक्त हो गए। फुहारी बाबा के कहे अनुसार राजा ने अपना सारा राज पाठ रघुनाथ जी के नाम कर दिया तथा स्वयं उनके छड़ीदार बने। रघुनाथ जी के सम्मान में ही राजा जगतसिंह द्वारा कुल्लू में दशहरे की परम्परा 1660 में रखी। कुल्लू में 365 देवी देवता भी रघुनाथ जी को ईष्ट मानकर दशहरे में सम्मिलित होने लगे।"2 "दशहरे की शुरूआत में कुल्लू घाटी में केवल पाँच देवी देवता पहले नवरात्रे को आते थे, नीणू के नारद, पालंगी से दुर्वासा जी, खोखण के आदि ब्रम्हा,बिजली महादेव खराह्ल से, ढालपुर से गोह्री देवता ये सभी उनका स्वागत में उपस्थित हुए थे। और ऐसा जब रघुनाथ जी की मूर्ति को कुल्लू लाया गया तो कालान्तर में समय के साथ अन्य देवताओं के रथ बन गए तो उनको भी समकालीन राजाओं ने दशहरे का निमन्त्रण देना प्रारम्भ कर दिया और ये सभी देवताओं के वार्षिक सम्मेलन के रूप में भी माना जाता है। जिससे घाटी के सभी देवी देवताओं की दशहरे में आने की परम्परा बन गई।''3

ऐतिहासिक रथ यात्रा

"रथ यात्रा जिसकी शोभा देखने के लिए सभी एक वर्ष का इन्तज़ार करते हैं। घोड़ पूजा तथा वीर पूजा के पश्चात मुहूर्त अनुसार सायं रथ यात्र रघुनाथ मंदिर से आरम्भ होती है जिसे ठाकर निकलणा कहते हैं। कुछ देव देवता रघुनाथ मंदिर से रघुनाथ जी के साथ जलूस की शक्ल में आते है। रघुनाथ जी की प्रतिमा पालकी में होती है तथा राजा को उनके साथ पैदल चलना पड़ता है। गहनों से सजी धजी नरसिंह की घोड़ी भी आगे आगे चलती है। बाजे गाजे तथा ध्वजों के साथ ढालपुर मैदान में पहुंचते हैं। रथ को चांदी के छत्र तथा कपड़ों से सजाया जाता है। तत्पश्चात रथ को रस्सी के साथ खींच कर श्री रामचन्द्र के जयघोष के साथ ढालपुर के मध्य रघुनाथ जी के 7 दिन के शिविर में पहुंचाया जाता है। छठे दिन रात को रघुनाथ जी के शिविर में देवी रूप होता है जिसमें राजा द्वारा शक्ति का पूजन किया जाता है। देवी को शेर पर सवार दर्शाया जाती है। चन्द्रावली नृत्य करती है। यहाँ भगवान राम के युद्ध पर जाने के पूर्व देवी को प्रसन्न करने की प्रथा है। देवी रूप के लिए नगर गाँव के एक ब्राम्हण परिवार के व्यक्ति को ही लाया जाता है। फिर रंगीन कपड़े तथा आभूषण पहनाकर उसे देवी का रुप विया जाता है।

सातवां दिन लंका दहन होता है जिसमें दिन को पहले राजा की चानणी शिविर कलाकेन्द्र के पीछे लगती है। लंका दहन के रूप में झाड़ियां जलाई जाती हैं। तथा एक व्यक्ति रावण का मुखौटा लेकर दौड़ कर आता है। यह रावण के वध का प्रतीकात्मक होता है। सीता जी को भी मैदान की ओर से पालकी में लाया जाता है। जिसे रावण के चंगुल से छुड़ाने का प्रतीक माना जाता है। फिर रघुनाथ जी अपने मंदिर लौटते हैं। रथ को अपने स्थान पर रखा जाता है। इस प्रकार दशहरे की विधि पूरी होती है। सातों दिन कुल्लू के कलाकेन्द्र में मेला कमेटी द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। प्रथम दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का उद्घाटन रात्रि को किया जाता है तथा अंतिम दिन समापन कार्यक्रम प्रातः औपचारिक

[1] ठाकुर मौलू राम,कुल्लू दशहरा की देव परम्पराएं (2010),पृ. 9, देवप्रस्थ भवन,ढालपुर कुल्लू

2 शर्मा विद्या, कुलान्त दर्पण,(2006), चन्द प्रकाशन,डोभी खराहल,ज़िला कुल्लू ,हिमाचल प्रदेश

[3] साक्षातकार, पुजारी नारद देवता गड़सा कुल्लू,28 अक्तूबर 2023

रूप से किया जाता है। यद्यपि इस दिन रात्रि कार्यक्रम भी चलते रहते हैं।"1 1973 में अन्तर्राष्ट्रिय सांस्कृतिक दलों ने दशहरे में अपनी प्रस्तुती देकर इसे अन्तर्राष्ट्रिय रुप प्रदान किया। आज तक हर दशहरे में कलाकेन्द्र में सात संस्कृतिक संध्याएं और दिन भर सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं चलती हैं। इस प्रकार लाल चन्द प्रार्थी कलाकेन्द्र इतिहास के पन्नों से आजतक अपना कीर्तिमान स्थापित किए हुए है।

कुल्लू दशहरे में 'महानटी': उद्भव एवं सांस्कृतिक प्रक्रिया

कुल्लू दशहरे में सामूहिक नृत्य की परंपरा सदियों पुरानी है, परंतु इसे वृहद स्तर पर 'महानटी' का रूप "वर्ष 2014-15 में तत्कालीन ज़िला प्रशासन द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के अंतर्गत महिला सशक्तीकरण को प्रदर्शित करने के लिए दिया गया। इसकी सांस्कृतिक प्रक्रिया के अंतर्गत हज़ारों महिलाएँ पारंपरिक कुल्लवी वेशभूषा (पट्टू और धातु) पहन कर ढालपुर मैदान में एक-दूसरे का हाथ थामकर विशाल वृत्ताकार मानव शृंखला बनाती हैं। यह नृत्य पारंपरिक वाद्यों (ढोल, नगाड़ा, शहनाई, रणसिंगा) की थाप पर (धीमी गति) से शुरू होकर क्रमिक रूप से तीव्र गति की ओर बढ़ता है। कुल्लू की महानाटी को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स (2014) इससे पूर्व वर्ष २०१४ में ८,५४० महिलाओं द्वारा प्रस्तुत 'प्राइड ऑफ कुल्लू' को राष्ट्रीय रिकॉर्ड का दर्जा मिला, जिसने वैश्विक कीर्तिमान का आधार तैयार किया। जिला प्रशासन कुल्लू एवं भाषा व संस्कृति विभाग के आधिकारिक रिकॉर्ड्स के अनुसार, यह आयोजन वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय दशहरे का मुख्य घटक है।"2

कुल्लू दशहरे में संगीत का स्थान

दशहरा सम्पूर्ण भारत में मनाया जाने वाला लोकप्रिय और भक्तिमय त्यौहार है । लेकिन कुल्लू जिला मे दशहरे को अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर मनाया जाता है और सात दिन तक संगीत झलक कई रुपों में प्रस्तुत होती है। देव संगीत व धुनें,चन्द्रावली, कुल्लू के दशहरे को एक सम्पूर्ण रुप प्रदान करने का कार्य संगीत के अभाव में असम्भव ही है। "कुल्लू के लेखक श्री कमल किशोर जी के अनुसार, हमारा कुल्लू का दशहरा संगीत से ही तो शुरु होता है, जैसे रघुनाथ जी के में पंचवीर का बाजा आता है, नौवत बजती है, संगीत से ही शुरु होता है। जहाँ तक मनोरंजन का साधन है, पारम्परिक प्रथाएं परम्पराएं निभाने के बाद संगीत ही मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन है। कलाकारों को प्रोत्साहित किया जाता है। और कलाकार के बिना कुल्लू दशहरा या कोई भी छोटा बड़ा मेला अधूरा है। संगीत संस्कृति का मेले त्योहारों का प्राण स्वरुप है।"3

डॉ. सूरत ठाकुर जी का मानना है कि "मेलों मे जो लोक वाद्य,पारम्परिक लोक नृत्स, लोक गीत इन सब की भूमिका मेलो में रहती है,इनके बगैर मेला ही नहीं होता,और इन चीज़ों को सुरक्षित रखा है,देवी देवताओं ने बिना वाद्य यंत्रों के एक कदम भी देवी देवता आगे नहीं चलते।"4 इन्होने अपनी पुस्तक देव परम्पराओं में संगीत में भी संगीत के महत्व पर प्रकाश डाला है।

महानाटी के गीत -

कुल्लवी नाटी को दशहरे मे बहुत से लोक गायक समूह में प्रस्तुत करते हैं।जिसमें मुख्य रुप से श्री धर्मेन्द्र शर्मा जी,डॉ. सूरत ठाकुर जी,सुश्री ट्विंकल और गोपाल शर्मा जी,कृष्णा ठाकुर जी अहवाई करते हैं और अन्य लोक गायक इनके साथ इस महानाटी के गीतों के उच्च स्वर में गाते हैं। बहुत सारे लोक वाद्यों ढोल,नगाड़े,शहनाई,करनाहल इत्यादि साथ में बजाए जाते हैं। नाटी का जो क्रम है, वो शास्त्रिय संगीत की लय की तरह तीनो विलम्बित फिर मध्यम और द्रुत लय की ओर चलता है। शुरु में दो गीत बहुत ढीली नाटी के,फिर कुछ बढी हुई लय के फिर मध्य मे माला में एक जैसे बहुत गीत गाए जाते हैं,फिर द्रुत और अति द्रुत लय के गीतों के साथ नाटी का समापन होता है। और गीतों का क्रम कुछ इस प्रकार है,समय और स्थान के अनुसार वांछित परिवर्तन गीतों में होते हैं। प्रत्येक गाने की दो तीन ही पंक्तियाँ गाई जाती हैं।

"एसा डेहरी बागा कुण बोसला
एसा डेहरी बागा साधु बोसला – 2
एई साधु रे दर्सन मु भी ज़ाणा थी -2
संघे देउए री चाकरी केरी एणा थी।
स्वर - रे ग रेसा सारे गरे सा नि प़,सा रे रे प ग रे,

1 साक्षात्कार,शर्मा श्याम,पुजारी माता त्रिपुरासुन्दरी नग्गर,20 अक्तूबर 2024
2 https://www.tribuneindia.com/news/archive/community/pride-of-kullu-enters-
3 साक्षात्कार.शर्मा कमल किशोर,रघुनातथपुर कुल्लू,24 मार्च 2021
4 साक्षात्कार,ठाकुर डॉ० सूरत, 21 मार्च 2025

रे ग रे सा सारे गरे सा नि प़,पनि सारे गरे सानि सा

विशेषता - इन को काफी थाट से प्रेरित स्वर कहा जा सकता है,और साथ ही ये एक पारम्परिक गीत है जिसकी पंक्तियाँ , साहित्य के हिसाब से ये गीत साधु के दर्शन की अर्दास कर रहा है,कि एक साधू देवते के बाग मे आया है उसके दर्शन और देवता की चाकरी साथ में कर आना था।

खेलिदी एज़े मेरी लालड़िए ओ- 2
कौसरे सौहा मेरी लाल्हड़िए ओ – 2
देउए री सोहा मेरी ल्हालड़िए
ज़ोंगडू शोले मेरी लाल्हड़िए
किज़ी रे तेले मेरी लाल्हड़िए ओ
गुटीरे तेले मेरि लाल्हड़िए ओ...
स्वर – प़ प़ नि नि सा, रे सा रे सारे गरे सा-सा, प़ प़ नि नि सा

विशेषताएं – ये भी कुल्लू का पारम्परिक गीत है। कुल्लू में एक धीमी गति का लाल्हड़ी नृत्य प्रचलित है,उसी का सम्बोधन करते हुए कहा जाता है कि खेलने आजा,इस गीत में मूल रुप से भाई का बहन के बीच का संदेश है कि आँगन में आजा,फिर लड़की कहती है थक गी तो भीई कहता है,तेल की मालिश कर दूँ।

हाड़े मामूआ हो पिंजरु बाशला जिजू तोता-2
चिटा तेरा ड़े मुहड़ू शेता चोला,
चोला मामुआ ओ चिटा तेरा ड़े मुंहड़ू शेता चोला।
स्वर – प़ नि सा रे सा रे ग रे सा रे सा नि प़, प प ध रे ग रे सा रे सा नि प़ ,
प़ नि सा रे, सा नि प़ नि सा

विशेषता - ये भी पारम्परिक गीत है जो कई वर्षों से कुल्लू की हर नाटी में गाया जाता है,इसमें गायक का तात्पर्य है कि जुजू राणा जिसको मृग भी कहा जाता थआ,वो नाले को आ चुका है,आगे तुबन्दी जोड़ते हुए कवि ने अपनी व्यथा का वर्णन किया है।कि प्यास से मेरा गला सूख रहा है,ठण्डा पानी का लोटा ला दो। सफेद चोला पहना है और सफेद ही मुँह है। इस प्रकार ये गीत वेशभूषा के साथ व्यक्ति का प्रकृति के साथ सम्बन्ध को भी प्रस्तुत करता है।

शूणे ओ बूधूआ मामा गाळटुआ गोडे लाई दे मेरे तेला।
हिका पिठी री दरदा मामा कुण बोला छोशिए देला।
नउंए सिले तैं झिकड़ू मामा गाळटुआ,
हेरि एणा शोयरी मेळा -2
स्वर – सा रे म प ध ,प ग रे सा रे सा नि प़, रे रे सा सा ग रे रे सा सा सा

इस गीत को भी कई अर्सों से सभी नाटियों में गाते आ रहे हैं, एस.डी कश्यप दी का लिखा ये गीत है। बुढापे की दशा का वर्णन करता हुए इश गीत में गायक अपनी दर्द बयां कर रहा है कि कौन मालिश करके देगा,घुटने पीठ दर्द कर रहे हैं। सायर मेले के लिए नए कपड़े सिलवा लाए हैं। इस प्रकार मेला और उस समय का जो लोक जीवन था मेले में कपड़े सिलवाने का,वो प्रस्तुत किया गया है।

छिड़ी चुंगणी ज़ोता मामा मोळ बोहणा सेरी
आ मामा अंगता मोळ बोहणा सेरी – 2
ज़ोसा मामी रे नाका न तीली सो मामी मेरी
आ मामा अंगता सो मामी मेरी।
चीटा गोभू नोठा मोरिया कोट किज़ीरा लाणा
आ मामा अंगता कोट किज़ीरा लाणा।

A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

कुत्ती पाली तेंरे शोगा बै
भले माणशा खान्दी। आ मामा.
स्वर – प प प मप मग,गेंरे सा स ध़,सा रे ग रे ग रे सा ध़
सा सा नि प़ सा स ग ग रे सा सा रे ग रे ग रे सासा

विशेषता - फिर थोड़ी सी गति बढ़ती है तो ये गीत गाया जाता है, लकड़ी चुनती चोटी पर जाकर ,गोबर ढोना सेरी मतलब खेत में मामा अंगत के नाम पर ये नाटी है और मामी के श्रृंगार को भी सम्बोधित किया गया है. जिस मामी के नाक में तिली वो मामी मेरी,सफेद भेड़ मर गई तो किस चीज़ का कोट सिलवाना।

पोटू आळिए भणज़िए, पोटू लाण की धाठू गै,
पौटू आळिए ,
चितरा लाउए बोला चादरु लाणा रेशमी धाटू गै,
पोटू आळिए
स्वर – सा- सानि प़ सा सा रे म प नि प म ग, रे म प नि प म प म रे
सारे ग रे सा सा रे,सा सानि प़ सा सा

विशेषता – ये पारम्परिक गीत कुल्लू की महिलाओं के पारम्परिक परिधान पट्टू के बारे में वर्णन करते हुए बता रहा है कि,पट्टू वाली भाणजी, पट्टू पहनना या धाटु,(जो सिर पर बांधा जाता है)। साथ में सफेद और काला चादरु और रेशमी धाठू पहना है,एसा इंगित किया गया है।इस प्रकार पूरे गीत में महिलाओं के पहनावे की संस्कृति की झलक हमें देखने को मिलती है।

बांके पोटू आळिए कैण्ढा बांका तेरा झलारा
बांकी धाठू आळिए कैण्ढा बांका तेरा नज़ारा
भर बरेसा रा झुरणा,तेरा उथड़ी कोठी रा होंडणा
तेंरे होंढणे भाळिए लागी रुकदी मोटरा कारा।
खिलखलांदा होसणा चुपाचुपिए दिला न बोसणा,
तेंरे होसणे भाळिए लागा ज़ोळदा ज़िउअड़ू म्हारा।
ढीली नोचदी नाटी संगे नोचदे धरत माटी
तेंरे नौचणे भाळिए,सागा नोचदा मुलक सारा।
स्वर – ग ग रे सा सा प ग ग रे सा,सा सा नि सा नि ध ध़ नि सा सा
नि सा ग म प-प ध प म

विशेषता – ग नि कोमल के साथ ये गीत कुल्लू की सुन्दर पट्टू वाली को कह रहा है कि कितना सुन्दर तेरा नाचना है कि धरती भी तेंरे साथ नाच रगही है,तेंरे हंसने से सारा मुल्क हंसने लगता है,तो युवती के श्रृंगार का सुन्दर वर्णन इन पंक्तियों में किया गया है। ये गीत आज डी जे मे भी खूब धूम मचा रहा है।

बिदा लागी दसमी हेरा ढालपुर शाड़ा
ढालपुर शाड़ा हो बेटिए,तेंरे ढालपुर शाड़ा।
बेटी लागी नोचदी हेरा ढालपुर शाड़ा।
ढालपुर शाड़ा हो बापुआ, हेरा ढालपुर शाड़ा
बेटी घोर सज़ान्दी, बेटी समाज बणान्दी ।
बेटी बे मौका दे बापुआ,
हेंरे हर सुपना सज़ाणा
बेटा, बेटी ज़ोखे बराबर खुश सा सो टब्बर,

नउएं समाजे हो बापुआ,केरे होथ आगे बढ़ाणा।
स्वर – ग ग रे ग ध,प म ग रे,ग रे सा सा नि प म प सा -सा
सा सा ग म प-प ,म म मप ग म ग रे सा, ग ग रे ग ध प म ग रे, गर सा सा नि प मृ प सा सा

विशेशताएं - ये गीत इसी नाटी का थीम बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर लिखा गया है,कि वो ढालपुर मैदान में नाच रही है। और बेटी कैसे घर के ,साथ समाज चलाती है,तो पिता को वो समछते हुए उसे आगे बढाना चाहए। ऐसा संदेश इस गीत के द्वारा दिया जा रहा है।

देश शोभला हिमाचल म्हारा, हिमाचल म्हारा ज़ेण्डा चमकू सर्गा रा तारा ।
ढोग डुंखरा रा देश सा म्हारा देउआ देवी वे बड़ा पियारा,देश शोभला
पाणी ज़ायरु ठंडड़ी बागर जगा जगा सी हिउंए री धारा। देश शोभला
ओरे भी धारा पोरे बी धारा मोंझे मोंझे म्हारा कुळू पियारा
मुख्य स्वर - प़ ध़ सा,ध़ सा सा,प़ ध़ सा ध़ सासा रे ग ग म ग रे,रे ग ग म ग रे,
रे-रे रे सारे,ग ग रे सा नि ध़ प़ ध़ सा ध़ सा सा

विशेषता - मंद्र सप्तक से शुरु होता हुआ एये देश भक्ति का गीत हिमाचल के लिए गाया गया है,ये भी पारम्परिक रुप से कई वर्षों से कुल्लू कू नाटी मे गाया जा रहा है। कहते हैं यहाँ भी पहाड़ वहाँ भी पहाड़,बीच में हमारा कुल्लू प्यारा है।

इसके बाद थोड़ा सा गति बढ़ाते हुए हा.... के साथ अगला गीत गाया जाता है।

रेड सेउए रा ओ निमा,लाणा बगिचड़ू रेड सेउए रा।
रोथड़ू शोभला म्हारे देउए रा,
मेरे नईएं खाइंदा बाड़ी लेहुरा,बाड़ी लेहुरा ओ निमा बाड़ी लेहुरा।
स्वर – ध़ रे रे रे , सा रे ग म, म रे रे रे सा ध़
ध़ ध रे रे सा रे गम ग रे रे ग सा – अगली पंक्ति में ऊँचा

विशेषता – लाल सेब का बगीचा लगाने की बात की जा रही है। तो ये गीत भी कुल्लू के बारवानी व कृषि जीवन की ओर संकेत करता है।

वेदे रामा ठाकरा,शाल धिनी कुळू नशाणी हो।
आपू ता नोठा तू मोरिए लो ठाकरा,वेदे रामा ठाकरा शाल धिनी कुळू नशाणी ओ
ओछी लागा बोहोन्दा पाणी लो।
स्वर – नि नि नि प़ नि सा रे ,प प प प ग रे सा रे ग रे सा ऩि सा

विशेषता - ये पारम्परिक गीत भुट्टिको जो प्रसिद्ध कुल्लवी शाल के ब्रांड के मालिक थे उनके नाम पर बनाय है,कि खुद मर कर चले गए और कुल्लू की शाल निशानी छोड़ गए। तो हर ऐतिहासिक व्यक्ति जो समाज के लिए प्रेरणा है,उस पर भी गीत गाए जा रहे हैं,आज तक।

चोल घोरा बे ज़ाणा डिड्डुआ -2
घोरा बै ज़ाणा चिड़ुआ-2
नाटी नोची लो शाड़ा न ,नाटी नोची लो शाड़ा न,
एबे घोरा बै ज़ाणा चिड़ुआ,एबे घौरा बे ज़ाणा।”1
स्वर – नि पृ नि नि सा रे सा सा,नि प़ सा सा सा-सा
प म प म रे रे ग रे नि नि ध ध नि सारे

विशेषता – ये पंक्तियाँ द्रुत गति में घर जाने के नाम पर गाई जाती है। देवी के नमस्कार करते हुए घर वापसी और नाटी खत्म करने की इजाज़त ली जाती है।

[1] लोक गायिका सुश्री ट्विंकल से गीतों की रिकॉर्डिंग द्वारा प्राप्त जानकारी

शोध प्रविधि

इस शोध कार्य में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया है। कुल्लू दशहरे के दौरान ढालपुर मैदान में आयोजित होने वाली नाटी का प्रत्यक्ष अवलोकन, लोक कलाकारों व सांस्कृतिक विशेषज्ञों के साक्षात्कार, और पुस्तकों, सोशल मीडिया एवं प्रिंट मीडिया के माध्यम से अवलोकन किया गया है।

समस्या का सूत्रीकरण एवं उद्देश्य

आधुनिकता, वैश्वीकरण और डिजिटल मीडिया के दौर में पारंपरिक लोक संगीत के लुप्त होने या उसके मूल स्वरूप के विकृत होने की चिंताएं निरंतर बनी हुई हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषित करना है कि किस प्रकार कुल्लू दशहरे की संगीत परंपरा ने अपनी जड़ों को सुरक्षित रखते हुए समकालीन समय में स्वयं को ढाला है। विशेष रूप से, 'महानाटी' के उदय ने पारंपरिक लोक संगीत को किस प्रकार एक वैश्विक और सामाजिक मंच प्रदान किया है, इसका अध्ययन करना इस शोध का मूल लक्ष्य है।

निष्कर्ष

शोध के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि कुल्लू दशहरे में लोक संगीत की परंपरा ने आधुनिक दौर में खुद को संकुचित करने के बजाय और अधिक विस्तारित किया है। 'महानाटी' लोक कला के आधुनिकीकरण का एक आदर्श मॉडल है, जहाँ संगीत की आत्मा और पारंपरिक राग (कुल्लवी धुनें) यथावत हैं, लेकिन उसका प्रदर्शन क्षेत्र, उद्देश्य और प्रभाव पूरी तरह से सांसकृतिक, प्रगतिशील तत्वों को दर्शाता है। हजारों महिलाओं द्वारा पारंपरिक परिधान (पट्टू, धाठू और आभूषणों) में एक साथ नाटी करने की इस विधा ने कुल्लू के लोक संगीत को 'गिनीज बुक' और 'लिमका बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' तक पहुँचाया है, जो लोक परंपरा के आधुनिक संस्थागत और प्रबंधकीय स्वरूप को दर्शाता है। पुराने के मुकाबले आज के समय में नए कलाकारों को मंच और मानदेह दोनो मिल रहा है। दशहरे में विभिन्न रुपों में लोक संगीत को किसी न किसी माध्यम से आधुनिक पीढ़ी तक जोड़े रखने का कारण मिला है।

महानाटी के गीत लोक जीवन के ऐसे तत्वों को उजागर करते हैं,जिनकी को परम्परागत रुप से विलुप्त होता ही माना जा सकता है,केवल ये गीत और मेले ही हैं जो इस संस्कृति को समय समय पर उजागर करके आज तक संगक्षित रखे हुए है। भाषा -बोली, रीति रिवाज़ ,रहन सहन संस्कृति के हर एक तत्व को ये गीत अपनी ओट में लिए हुए हैं।

संदर्भ

1. ठाकुर मौलू राम,कुल्लू दशहरा की देव परम्पराएं (2010),.पृ. 9, देवप्रस्थ भवन, ढालपुर कुल्लू
2. शर्मा विद्या, कुलान्त दर्पण,(2006), चन्द प्रकाशन,डोभी खराहल,ज़िला कुल्लू ,हिमाचल प्रदेश
3. साक्षातकार, पुजारी नारद देवता गड़सा कुल्लू,28 अक्तूबर 2023
4. साक्षात्कार,शर्मा श्याम,पुजारी माता त्रिपुरासुन्दरी नग्गर,20 अक्तूबर 2024
5. https://www.tribuneindia.com/news/archive/community/pride-of-kullu-enters-
6. साक्षात्कार.शर्मा कमल किशोर,रघुनातथपुर कुल्लू,24 मार्च 2021
7. साक्षात्कार,ठाकुर डॉ सूरत, 21 मार्च 2025
8. लोक गायिका सुश्री ट्विंकल से गीतों की रिकॉर्डिंग द्वारा प्राप्त जानकारी